श्री बजरंग बाण

दोहा

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, विनय करैं सनमान ।

तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करें हनुमान ॥

जय हनुमन्त संत हितकारी ।

सुन लीजै प्रभु अरज हमारी ॥

जन के काज बिलम्ब न कीजै ।

आतुर दौरि महासुख दीजै ॥

जैसे कूदि सिन्धु महि पारा ।

सुरसा बदन पैठी विस्तारा ॥

आगे जाय लंकिनी रोका ।

मारेहु लात गई सुरलोका ॥

जाय विभीषण को सुख दीन्हा ।

सीता निरखि परम पद लीन्हा ॥

बाग उजारि सिन्धु मह बोरा ।

अति आतुर जमकातर तोरा ॥

अक्षय कुमार मारि संहारा ।

लूम लपेटि लंक को जारा ॥

लाह समान लंक जरि गई ।

जय-जय धुनि सुरपुर में भई ॥

अब बिलम्ब केहि कारण स्वामी ।

कृपा करहु उर अन्तर्यामी ॥

जय जय लखन प्रान के दाता ।

आतुर होइ दुःख करहु निपाता ॥

जै गिरिधर जै जै सुख सागर ।

सुर-समूह-समरथ भट-नागर ॥

ॐ हनु हनु हनु हनुमन्त हठीले ।

बैरिहि मारु बज्र की कीले ॥

गदा बज्र लै बैरिहि मारो ।

महाराज प्रभु दास उबारो ॥

ॐकार हुंकार महाप्रभु धाओ ।

बज्र गदा हनु विलम्ब न लाओ ॥

ॐ ह्नीं ह्नीं ह्नीं हनुमन्त कपीसा ।

ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर-सीसा ॥

सत्य होहु हरि शपथ पायके ।

राम दूत धरु मारु जायके ॥

जय जय जय हनुमन्त अगाधा ।

दुःख पावत जन केहि अपराधा ॥

पूजा जप-तप नेम अचारा ।

नहिं जानत हो दास तुम्हारा ॥

वन उपवन मग गिरि गृह मांहीं ।

तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं ॥

पायं परौं कर जोरी मनावौं ।

यहि अवसर अब केहि गोहरावौं ॥

जय अंजनी कुमार बलवंता ।

शंकर सुवन वीर हनुमंता ॥

बदन कराल काल कुलघालक ।

राम सहाय सदा प्रतिपालक ॥

भूत प्रेत पिशाच निशाचर ।

अग्नि बैताल काल मारि मर ॥

इन्हें मारु तोहि शपथ राम की ।

राखउ नाथ मरजाद नाम की ॥

जनकसुता हरि दास कहावो ।

ताकी शपथ विलम्ब न लावो ॥

जय जय जय धुनि होत अकासा ।

सुमिरत होत दुःसह दुःख नासा ॥

चरण शरण कर जोरि मनावौं ।

यहि अवसर अब केहि गोहरावौं ॥

उठु उठु चलु तोहि राम-दोहाई ।

पायँ परौं कर जोरि मनाई ॥

ॐ चं चं चं चं चपल चलंता ।

ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमन्ता ॥

ॐ हं हं हाँक देत कपि चंचल ।

ॐ सं सं सहमि पराने खल-दल ॥

अपने जन को तुरत उबारौ ।

सुमिरत होय आनंद हमारौ ॥

यह बजरंग बाण जेहि मारै ।

ताहि कहो फिर कौन उबारै ॥

पाठ करै बजरंग बाण की ।

हनुमत रक्षा करैं प्रान की ॥

यह बजरंग बाण जो जापैं ।

ताते भूत-प्रेत सब कापैं ॥

धूप देय अरु जपै हमेशा ।

ताके तन नहिं रहै कलेसा ॥

दोहा

प्रेम प्रतीतिहि कपि भजै, सदा धरै उर ध्यान ।

तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान ॥